आपने लिख

मैंने संदर्भ के अंक 39 में प्रकाशित लेख चुंबकत्व और विद्युत दो जुड़वां भाई पढ़ा। इस लेख में काफी नई जानकारियां मिलीं। खासतौर पर यह कि सभी पदार्थ परमाणुओं से बने हैं तो भी सभी चुंबकत्व क्यों प्रदर्शित नहीं करते? साथ यह भी कि परमाणु के नाभिक के चारों ओर इलेक्ट्रॉन बादल के रूप में मौजूद रहते हैं। और यह भी कि नाभिक के चारों ओर घूमने के साथ-साथ इलेक्ट्रॉन अपनी धुरी पर भी घूमते हैं जिसकी वजह से पदार्थ को चुंबकत्व प्राप्त होता है।

इसी लेख के पृष्ठ 39 पर यह लिखा है कि यदि दो तारों में विपरीत दिशा में विद्युत धारा बह रही हो तो इन तारों के बीच चुंबकीय आकर्षण पैदा होता है। लेकिन यदि दो तारों में एक ही दिशा में विद्युत बह रही हो तो तारों के बीच निर्मित चुंबकीय क्षेत्र तारों को विकर्षित करेगा।

जबकि मैंने *बेसिक इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, भाग:1, बी. एल. थेराजा* पेज 223 में पढ़ा है कि – "दो समांतर तार एक-दूसरे को आकर्षित करेंगे यदि उनमें से विद्युत धारा समान दिशा में प्रवाहित हो रही हो। और एक-दूसरे को विकर्षित करेंगे यदि उनमें से होकर बहने वाली विद्युत धारा विपरीत दिशा में बह रही हो।"

मैं थोड़ा दुविधा में हूं। कृपया मेरा मार्गदर्शन कीजिए और बताइए कि हकीकत क्या है?

अजय नामदेव तायडे
बडनेरा, ज़िला अमरावती, महाराष्ट्र

आपने सही बताया है। पेज 39 के वाक्य में सुधार कर उसे इस तरह पढ़ा जाना चाहिए – 'यदि दो तारों में विपरीत दिशा में विद्युत बह रही हो तो इन तारों के बीच चुंबकीय विकर्षण पैदा होगा। लेकिन यदि दो तारों में एक ही दिशा में विद्युत धारा प्रवाहित हो रही हो तो तारों के बीच निर्मित चुंबकीय क्षेत्र तारों को आकर्षित करेगा।'

– संपादक मंडल

अंक 39 ज्ञानवर्धक और जानकारी पूर्ण रहा। मैंने इसी साल विज्ञान विषय लिया है। संदर्भ से काफी सहायता मिल रही है, साथ ही रुचि में भी विस्तार हो रहा है। चाहे वह जीव-जगत हो या कोई अन्य लेख, समझाया काफी विस्तार से जाता है।

अंक 39 में लिटसम का इतिहास, सवालीराम, चींटियों का पत्तीघर लेख अच्छे रहे। संदर्भ के कवर पर छपा चित्र बकवास लगा, ऐसा लगा सिर्फ कवर पूरा करने के लिए था। आप कवर पर बेहतर चित्र प्रकाशित किया कीजिए। साथ ही आप विज्ञान के क्षेत्र में हो रही खोजों, प्रयोगों की खबरें भी प्रकाशित करते रहें ताकि उन्हें अन्य जगह न ढूंढना पड़े। अंक 40 का इंतज़ार कर रहा हूं।

राजकुमार बंसल
भदरा, राजस्थान

संदर्भ का 39वां अंक हाथ में ही है। प्रोफेसर यशपाल का लेख बहुत अच्छा लगा। अगस्त 2000 में प्रोफेसर यशपाल झाबुआ भी आए थे। वहां मैंने उनके विचार को प्रत्यक्षतः सुना। 'आदिवासी बच्चों के साथ विज्ञान चर्चा' के अंतर्गत दूर-दूर से बच्चे आए थे। उनसे सवाल पूछने के लिए कहा गया लेकिन झिझक के कारण बच्चे सवाल नहीं पूछ रहे थे तब यशपाल बच्चों से खुद सवाल पूछने लगे। फिर हस्त-रेखाओं पर बात चल निकली। अंधविश्वासों को दूर करते हुए जीवन रेखा, हृदय रेखा, आदि को नकारते हुए प्रोफेसर यशपाल ने बताया कि जिस तरह हाथ-पैरों को मोड़ने के लिए जोड़ों की ज़रूरत होती है उसी तरह हथेली को मोड़ने के लिए भी चमड़ी में सिलवटें होना ज़रूरी हैं, जो रेखाओं के आकार और रूप में दिखाई देती हैं। जहां से हाथ बार-बार मुड़ता है वे रेखाएं ज़्यादा गहरी हो जाती हैं।

बीच-बीच में वे मज़ेदार सवाल भी पूछते गए मसलनः पृथ्वी का आकार ऊपर-नीचे की ओर थोड़ा चपटा क्यों है जबकि जगह की कोई कमी नहीं थी? बच्चों ने जवाब देने की कोशिश की – अंत में यशपाल जी ने सही जवाब देकर बच्चों की जिज्ञासा को शांत किया।

उन्होंने एक छोटे से नाटक के माध्यम से ओज़ोन परत के नष्ट होने के कारण को समझाया। मैंने भी उनसे इस नाटक के माध्यम से कक्षा में पढ़ाने की अनुमति चाही तो उन्होंने सहर्ष मान लिया। मैंने अपनी कक्षा में इस नाटक के मार्फत बच्चों के साथ प्रयोग किए जो काफी रोचक और मज़ेदार रहे। समझने में जो आनंद है वह किसी और में नहीं।

काजल कुमार नंदी
झाबुआ, मध्यप्रदेश

काफी लंबे अंतराल के बाद कुछ दिनों पहले ही अपने गांव पहुंचा और संदर्भ के सहेजकर रखे हुए पुराने अंक देखने लगा। संदर्भ के परिवर्तित कलेवर को देखकर अत्याधिक प्रसन्नता हुई। पहले केवल मैं ही संदर्भ पढ़ता था लेकिन मेरी अनुपस्थिति में मेरे परिजन भी अनायास इस पत्रिका की ओर आकर्षित होते चले गए और उन्हें भी संदर्भ का बेसब्री से इंतज़ार रहता है। मुझे पिछले कुछ अंकों में प्रकाशित लेख एवं संबंधित चित्र बेहद अच्छे लगे।

मेरा सुझाव है कि आप अपने नियमित पाठकों को साल में एक बार

कोई उपहार ज़रूर भिजवाया कीजिए जैसे कैलेंडर आदि जो संदर्भ के प्रचार का एक अच्छा, सस्ता और सुलभ तरीका हो सकता है।

शशि कुमार जोशी
भिनाय, अजमेर, राजस्थान

संदर्भ का अंक 39 मिला। पाकर खुशी हुई। संदर्भ पर चिपकी पते वाली पर्ची पर अंकित है 44th issue (last issue) जो ठीक नहीं है क्योंकि मैंने सदस्यता शुल्क एक साल का भेजा था और अभी तो अंक 39 ही मिला है। जो पहला अंक मिला वो ही अंतिम अंक कैसे हो गया? कृपया तहकीकात करने का कष्ट कीजिए।

टिकाराम पटेल
मिदनापुर, पश्चिम बंगाल

पिछले अंक में 'चींटियों का पत्तीघर' लेख में बरबूटा का जीववैज्ञानिक नाम Occophylla बताया गया था उसे सुधारकर Oecophylla पढ़िए।

– सपादक मडल

क्या है इसके मायने

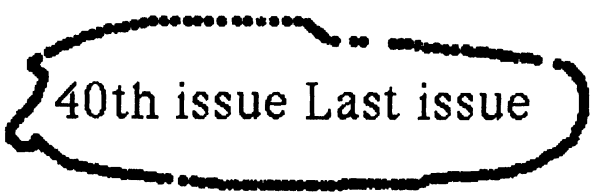

संदर्भ के वार्षिक सदस्यों के लिफाफे पर चिपकी पते वाली पर्ची पर ऊपर की तरह लिखा होता है। इसका मतलब है कि आपकी वार्षिक सदस्यता 40वें अंक तक है।

यदि आपकी पर्ची पर लिखा है 44th issue (Last issue) तो उसका अर्थ है कि 44वां अंक अंतिम है यानी आपकी सदस्यता 44वें अंक पर खत्म हो रही है। इसलिए अंक 43 मिलते ही अपनी वार्षिक सदस्यता का नवीनीकरण करवा लीजिए।